पाठ 14. मैया मोरी

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में तनाव से निपटने का कौशल विकसित करना है ताकि उनमें अपनी तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति समझ पैदा हो सके। 'बचपन' और उसकी बाल लीलाएँ शाश्वत भी हैं और सुंदर भी। समय चाहे यशोदा और बाल-कृष्ण का रहा हो, चाहे आधुनिक समाज की नई सभ्यता का। बच्चे और माँ की सहज और उन्मुक्त नोंकझोंक वात्सल्य और मिठास से भरपूर होती है। बाल क्रीड़ा युक्त एक दृश्य के अनुभव से मिलना एक खूबसूरत छवि से मिलना होता है।

पाठ का सार

बालक कृष्ण तो माखन चोरी के लिए जाने ही जाते हैं। उन्होंने माखन खाया और उनकी शिकायत हुई। अपना बचाव करते हुए नटखट कन्हैया माँ यशोदा से कहते हैं कि उन्होंने माखन नहीं खाया। बाल श्रीकृष्ण कहते हैं–मैं तो सवेरे से ही गाय चराने के लिए बंसीवट में भटक रहा था। यह माखन मेरे मुख पर तो बाकी ग्वालों ने ज़बरदस्ती लिपटा दिया है। मैं खुद तो ऊपर छींके पर रखे माखन को उतार भी नहीं सकता। मेरी तो बाँहें भी छोटी हैं। माँ यशोदा ने कान्हा को निर्दोष मानने से इनकार-सा कर दिया तो कृष्ण माँ यशोदा पर ही उलटा आरोप लगाने लगे कि मैं आपका सगा बेटा नहीं हूँ इसलिए आप मेरा पक्ष नहीं ले रही हैं। माँ का दिल भला ऐसी कठोर शिकायत कैसे सुन-सह सकता था। माँ यशोदा बाल-गोपाल को सीने से लगा लेती हैं।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  सूरदास जी के कृष्ण बाल-लीला संबंधी दूसरे पदों के आंशिक पाठ, उनकी विषय-वस्तु पर चर्चा से बच्चों के वात्सल्य भाव को अनुभूत कराया जाए। तदंतर पद का सस्वर वाचन अध्यापक द्वारा, भाषागत सरलीकरण देशकाल के अनुरूप करते हुए पद को सहज ग्राह्य बनाते हुए विद्यार्थियों से इसे पढ़ने, वाचन करने को कहा जाए। लय, बलाघात, लोक-भाषा के संस्पर्श की रक्षा की जाए। पूरे मिठास के साथ पद तक पहुँचने पर शहरी-ग्रामीण का अंतर भी मिटेगा। शब्दार्थ, भावग्रहण के बाद प्रश्नोत्तर करवाएँ।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 3** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - आंचलिक भाषाओं के हिंदी पर्याय तथा पर्यायवाची शब्दों को चुनने का अभ्यास कराया जाना चाहिए। इसके लिए पाठ से अलग कुछ अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं।

- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - 'झूठ बोलना पाप है।'–इस विषय पर कक्षा में बच्चों के बीच चर्चा करवाएँ। झूठ बोलने और झूठ पकड़े जाने पर क्या स्थिति होती है, इस विषय पर बच्चों के अनुभव पूछे जा सकते हैं।
  - कृष्ण जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओं से संबंधित झलकियाँ चित्र रूप में संकलित कर दिखाई जा सकती हैं।